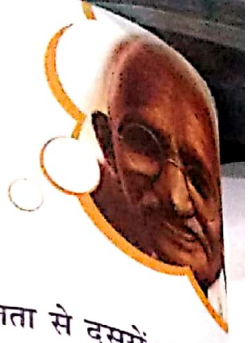

9. बापू का पत्र

पत्र-लेखन हिंदी साहित्य की प्रमुख विधा है। पत्रों के द्‌वारा हम अपने मन की बात सरलता से दूसरों को समझा सकते हैं। पत्र दूर बैठे व्यक्ति तक अपने विचार पहुँचाने का एक उपयोगी साधन है।

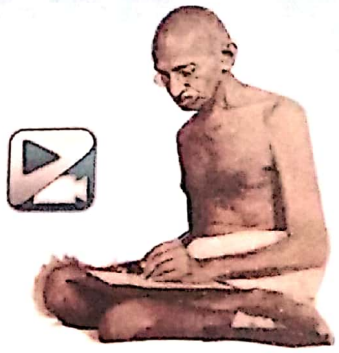

प्रिटोरिया जेल

25 मार्च, 1909

प्रिय बेटे,

हर महीने एक पत्र लिखने और एक पत्र पाने का अधिकार मुझे मिला है। मेरे बारे में तुम ज़रा भी चिंता मत करना। मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ हूँ। आशा है कि बा अच्छी हो गई होंगी। मुझे मालूम है कि तुम्हारे कुछ पत्र यहाँ आए हैं, लेकिन वे मुझे नहीं दिए गए। फिर भी डिप्टी-गवर्नर की भलमनसी से मुझे मालूम हुआ कि 'बा' का स्वास्थ्य सुधर रहा है। मैं अब कुछ तुम्हारे बारे में कहना चाहूँगा। तुम कैसे हो? मैं यह जानता हूँ कि तुम्हें अपनी शिक्षा से असंतोष है। यहाँ जेल में मैंने खूब पढ़ा है। इस पढ़ाई से मैंने समझा है कि केवल अक्षर-ज्ञान होना ही सच्ची शिक्षा नहीं होती। सच्ची शिक्षा तो चरित्र-निर्माण और कर्तव्य का बोध है। यदि दृष्टिकोण सही है, तो तुम सच्ची शिक्षा प्राप्त कर रहे हो। आजकल तुम्हें अपनी बीमार माँ की सेवा का अवसर मिला हुआ है। रामदास और देवदास को भी तुम सँभाल रहे हो।

आमोद-प्रमोद एक निश्चित आयु तक ही शोभा देते हैं। बारह वर्ष की उम्र के बाद बच्चों को ज़िम्मेदारी और कर्तव्य का भान होना चाहिए। उन्हें अपने आचार और विचार में सत्य और अहिंसा के

प्रयोग की चेष्टा करनी चाहिए। मैं जब तुमसे काफ़ी छोटा था, तो मुझे स्वयं अपने पिता जी की सेवा करने में बहुत आनंद मिलता था। दूसरों पर निर्भर रहने की जगह अपने काम खुद करना अधिक सुखद है।

काम की अधिकता से मनुष्य को घबराना नहीं चाहिए और न ही यह सोचना चाहिए कि यह कैसे होगा और पहले क्या करूँ? शांत मन से विचारपूर्वक तुमने यदि सभी सद्‌गुणों को प्राप्त करने की चेष्टा की तो वे तुम्हारे लिए बहुत उपयोगी और मूल्यवान प्रमाणित होंगे।

मुझे यह भी आशा है कि तुम रोज़ नियमपूर्वक प्रार्थना करते होगे। सूर्योदय से पहले उठकर प्रार्थना करना बहुत ही अच्छा है। प्रयत्नपूर्वक एक निश्चित समय पर ही प्रार्थना करनी चाहिए। यह नियमितता तुम्हें अपने जीवन में आगे चलकर बड़ी सहायक सिद्‌ध होगी।

अंत में, मैं प्रेम सहित यह पत्र समाप्त करता हूँ।

तुम्हारा पिता,

मोहनदास

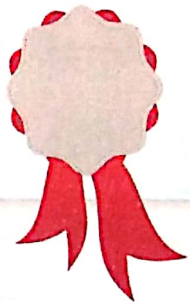

अभ्यास

शब्दार्थ–

पूर्ण रूप से	पूरी तरह से	**भलमनसी**	सज्जनता
स्वास्थ्य	सेहत	**कर्तव्य**	करने योग्य काम
दृष्टिकोण	सोचने का तरीका	**आमोद-प्रमोद**	मनोरंजन
भान	ज्ञान	**चेष्टा**	प्रयास
मूल्यवान	कीमती	**नियमितता**	नियम के अनुसार चलना
सिद्‌ध	साबित		

Scanned with CamScanner

पाठ को समझें

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो–

मौखिक–

क. गांधी जी को क्या मालूम है?

ख. निश्चित आयु तक क्या शोभा देता है?

ग. क्या करना अधिक सुखद है?

घ. अपने आचार-विचार में किसकी चेष्टा करनी चाहिए?

लिखित–

कुछ शब्दों में

क. यह पत्र किसने, किसको, कहाँ से लिखा?

ख. गांधी जी को हर महीने कितने पत्र लिखने का अधिकार मिला?

ग. बारह वर्ष की आयु के बाद बच्चों को किसका भान होना चाहिए?

घ. जीवन में आगे चलकर क्या सहायक होता है?

ज़्यादा शब्दों में

क. सच्ची शिक्षा क्या है?

ख. गांधी जी ने कौन-से काम खुद करने को कहा है?

ग. गांधी जी के अनुसार कौन-सी बातें उनके बेटे के लिए उपयोगी और मूल्य
प्रमाणित होंगी?

घ. प्रार्थना के बारे में गांधी जी ने क्या बताया?

भाषा को समझें

1. दो शब्दों, वाक्यों अथवा वाक्यांशों को जोड़ने वाले श
'समुच्चयबोधक' कहलाते हैं। जैसे–

क. गांधी जी को सत्य और अहिंसा पर विश्वास था।

ख. प्रार्थना करना आवश्यक है, लेकिन प्रतिदिन नियमपू
प्रार्थना करनी चाहिए।

Scanned with CamScanner

उचित समुच्चयबोधक चुनकर रिक्त स्थान भरो–

क. यह तुम्हारे लिए उपयोगी ....और.... मूल्यवान प्रमाणित होगा। (कि / पर / और)

ख. कुछ लोग निखर जाते हैं ....और.... कुछ लोग बिखर जाते हैं। (अतः / और / यद्यपि)

ग. सुनीता ने कठिन परिश्रम किया ....क्योंकि.... वह प्रथम स्थान पाना चाहती थी। (क्योंकि/ अन्यथा / फलतः)

घ. पढ़ लो ....नहीं तो.... असफल हो जाओगे। (यदि / नहीं तो / तथापि)

ङ. प्रतिदिन व्यायाम करो ....ताकि.... स्वस्थ रहो। (क्योंकि / इसलिए / ताकि)

2. 'स', 'परि', 'दुर्' उपसर्ग जोड़कर नए शब्द बनाओ व उनके अर्थ लिखो–

क. स + जग = ...सजग.... = ...जागरुक....

ख. परि + चय = ...परिचय.... = ...जान पहचान....

ग. स + पूत = ...सपूत.... = ...अच्छा बेटा....

घ. दुर् + घटना = ...दुर्घटना.... = ...बुरी घटना....

ङ. दुर् + गुण = ...दुर्गुण.... = ...बुरे गुण....

3. उस शब्द पर ✓ लगाओ जिस पर अनुनासिक (ँ) लगेगा–

चिंता ☐	स्वयं ☐	यहां ✓ (यहाँ)	में ☐
आनंद ☐	पांच ✓ (पाँच)	अहिंसा ☐	शांत ☐
संस्कृत ☐	अंत ☐	संभाल ✓ (सँभाल)	रंग ☐
अंदर ☐	मंद ☐	स्वतंत्र ☐	कांपना ✓ (काँपना)
जंगल ☐	घमंड ☐	संभव ☐	गांव ✓ (गाँव)

Scanned with CamScanner

4. दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखो–

स्वस्थ – अस्वस्थ

आशा – निराशा

ज्ञान – अज्ञान

सच्ची – झूठी

अहिंसा – हिंसा

उपयोगी – अनुपयोगी

सद्गुण – दुर्गुण

मूल्यवान – मूल्यहीन

रचनात्मक कार्य

1. विभिन्न देशभक्तों के चित्र एकत्र करके स्क्रैप बुक में लगाओ। साथ में उनका नाम व संक्षिप्त जीवन-परिचय भी सुरुचिपूर्ण तरीके से लिखो।
2. 'बॉर्डर' फ़िल्म का 'संदेशे आते हैं....' गीत गुनगुनाओ।
3. 'यू ट्यूब' पर गांधी जी का एनीमेटेड जीवन-चरित्र देखो।

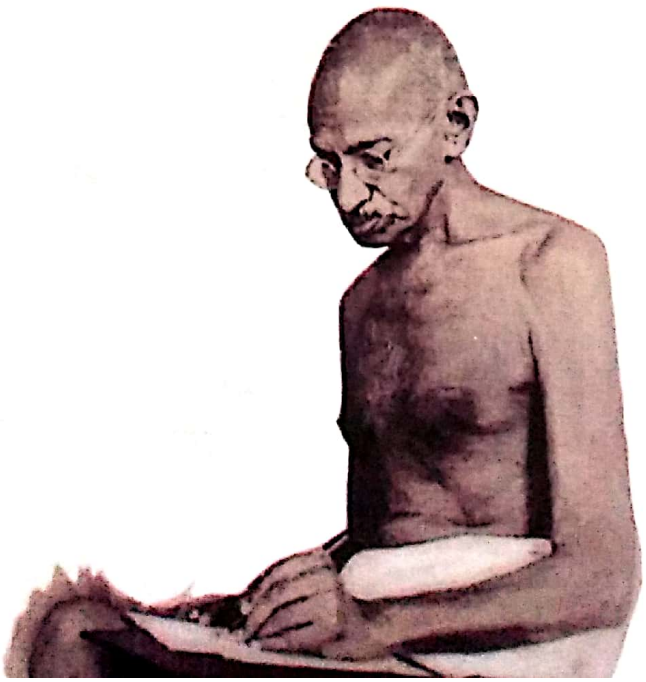

Scanned with CamScanner

पाठ- 9 (बापू का पत्र)

मौखिक

उ० क गाँधी जी को मालूम है कि उनके बेटे के कुछ पत्र जेल में आए थे, जो उन्हें नहीं दिए गए थे।

उ० ख आमोद प्रमोद निश्चित आयु तक ही शोभा देता है।

उ० ग दूसरों पर निर्भर रहने की बजाय अपना काम खुद करना अधिक सुखद है।

उ० घ अपने आचार-विचार में सत्य और अहिंसा के प्रयोग की चेष्टा करनी चाहिए।

लिखित

उ० क यह पत्र गाँधी जी ने अपने बेटे को प्रिटोरिया जेल से लिखा।

उ० ख गाँधी जी को हर महीने एक पत्र लिखने का अधिकार मिला।

उ० ग बारह वर्ष की आयु के बाद बच्चों को ज़िम्मेदारी और कर्तव्य का भान होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

Page No.
Date :

उ०घ नियमितता जीवन में आगे चलकर सहायक होती है।

ज़्यादा शब्दों में

उ०क गाँधी जी के अनुसार केवल अक्षर ज्ञान होना ही सच्ची शिक्षा नहीं है वरन् चरित्र-निर्माण और कर्तव्य का बोध ही सच्ची शिक्षा है।

उ०ख गाँधी जी ने अपने सभी काम खुद करने के लिए कहा है। मनुष्य को स्वावलंबी बनना चाहिए ताकि वह स्वाभिमान से जी सके।

उ०ग गाँधी जी के अनुसार शांत मन से विचारपूर्वक सभी सद्गुणों को प्राप्त करने की चेष्टा की जाए तो यह उनके बेटे के लिए उपयोगी और मूल्यवान प्रमाणित होगा।

उ०घ प्रार्थना के बारे में गाँधी जी ने बताया कि सूर्योदय से पहले उठकर एक निश्चित समय पर नियमित रूप से प्रार्थना करनी चाहिए।